ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 206-209

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

भारतीय चित्रकला में महिला चित्रकारों के योगदान का विश्लेषण

1. वैशाली
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-03.12.2023, Revised-08.12.2023, Accepted-13.12.2023 E-mail: vaishaliray7@gmail.com

सारांशः ***प्राचीन काल से ही कला मनुष्य के जीवन में भावों को अभिव्यक्त करने का साधन रही है। इसलिए कहा जा सकता है कि कला बाहरी माध्यम से अपनी भावनाओ की अभिव्यक्ति है। कलाकार भी इस अभिव्यक्ति के लिए नए–नए माध्यमों को तलाश करता है, तॉकि वह अपनी भावनाओं को अधिक से अधिक बलपूर्वक और प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सके। कला एक रचनात्मक गतिविधि है, जो कल्पनाशील या तकनीकी कौशल को व्यक्त करती है। भारत में कला अपनी मातृभूमि में जीवंत रही है और समय–समय पर पूरे विश्व में फैलती रही है 5000 साल पुरानी संस्कृति के साथ भारतीय कला, प्राचीन विरासत, मध्ययुगीन कला, मुगल शासन, ब्रिटिश शासन, प्रगतिशील कला और अब समकालीन कला के अपने टेपेस्ट्री में समृद्ध है। भारतीय संस्ति जितनी पुरानी है, उसकी कलाएँ और प्रथाएं भी उतनी पुरानी हैं । कलाओं का विकास मानव विकास से भी जुड़ा हुआ है। उसी तरह कुछ महिलाये भी अपनी कला अभिव्यक्ति के माध्यमों से अपनी अविरल साधना से समाज में चेतना का विकास कर समाज का शोधन कार्य करती आई है। प्राचीन से आधुनिक काल तक महिलाओं ने भारतीय कला में उत्ष्ट प्रदर्शन किया है।***

कुंजीभूत शब्द– महिला चित्रकारों, योगदान, प्रतिष्ठित, अभिव्यक्ति, भागीदारी, कलाकृति, कल्पनाशील, तकनीकी कौशल, मातृभूमि।

हमारे भारतीय समाज में हमेशा से ही नारी शिक्षा को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता रहा है। अगर हम प्राचीन काल की बात करें, तो उस समय शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती थी तथा शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल पुरुषों को ही था। लड़कियों की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी । इसके पश्चात् बौद्ध कालीन युग में भी स्त्री शिक्षा की उपेक्षा की गई। उस समय में भी शिक्षा केवल बौद्ध मठों व विहार में दी जाती थी, क्योंकि शिक्षा वही रह कर प्राप्त करनी थी तथा इसके लिए बच्चों को घर से दूर इन मठों एवं विहार में रहकर गुरुजनों की सेवा कर शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। इसलिए इन मठों से स्त्रियों को दूर ही रखा गया। केवल बड़ें घरों की लड़कियाँ परदें में रहकर घर पर ही शिक्षा प्राप्त कर सकती थी, किन्तु निम्न वर्ग की महिला के शिक्षा प्राप्त करने की कोई व्यवस्था नहीं थी। किसी भी समुदाय में बात की जाए, तो नारी शिक्षा को हमेशा से उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता रहा है। नारी शिक्षा में अनेक मत प्रचलित हैं। पुरुष अपने अहंकार वश नारी की शिक्षा के प्रति हमेशा से पूर्वाग्रहित रहा है। जबकि नारी बुद्धि एवं शक्ति में किसी पुरुष से कम नहीं रही है; उसमें पुरुषों से कहीं अधिक उत्तम शक्ति है, जो उसे किसी भी प्रकार की परीक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करती है।

भारतीय चित्रकला के इतिहास में यदि झांककर देखा जाए, तो महिला कलाकारों की उपस्थिति लगभग नगण्य दिखाई पड़ती है। यद्यपि भारतीय संस्ति और समाज में लोक कलाओं को पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ाने और परिष्त करने का भार महिलाओं के कंधों पर ही रहा है।

जिसे उन्होंने बखूबी वहन किया है, किंतु यदि लोक कथाओं को दरकिनार करके देखा जाए, तो हम पाते हैं कि कला में आरंभ से ही पुरुष सत्ता स्त्री सत्ता पर सदैव हावी रही है और अमूमन यही स्थिति आज भी देखने को मिलती है, लेकिन आधुनिक युग में महिला कलाकारों ने न केवल स्त्रियों को नई पहचान दिलाई है, अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके अधिकारों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा करी है। आधुनिक युग में महिलाओं की कला के क्षेत्र में भागीदारी काफी प्रभावशाली ढंग से बढ़ी है। प्रारंभ में केवल कुछ ही महिला कलाकारों को गिना जाता था। इनमें परा और स्वर्ण कुमारी का नाम प्रमुख है। इन दोनों कलाकारों ने न केवल अपने को, अपितु संपूर्ण नारी जाति को सम्मान दिलाया। भारतीय समाज में महिलाओं को एक पहचान मिली। इन कला रूपी पंखों ने इन महिला कलाकारों को आकाश में उड़ान की एक चाह प्रदान की।

सन् 1970 के दशक में महिला कलाकारों की कला में कुछ परिवर्तन आया। अब इनमें आत्म–जागृति का उदय हुआ। सन् 1986 में ललित कला अकादमी त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली, भारत सरकार की मानवाधिकार एवं विकास मंत्रालय, शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, वूमेन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से भारतीय महिला कलाकार शीर्षक से देश की प्रमुख महिला कलाकारों की संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। निश्चित ही देश में महिला कलाकारों की यह प्रथम विशाल प्रदर्शनी थी, जिसमें देश की अनेक महिला कलाकारों को एक मंच प्रदान किया गया। इस प्रदर्शनी में 43 महिला कलाकारों की 73 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य– महिला कलाकारों का परिचय करा के विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है, ताकि महिला कलाकारों का चित्रकला का सही अर्थापन किया जा सके और प्रतिभाशाली महिला कलाकारों के कार्यों पर प्रकाश डालना है। महिला कलाकारों ने चित्रकला के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण मोगदान दिया है। वह समाज सुधारक, सौन्दर्य प्रेमी और कला जिज्ञासु बनकर उभरी हैं। समाज में फैली अव्यवस्थाओं को सुधारने में भी अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रही हैं। आज हमारे देश में ऐसी बहुत सी महिला कलाकार हैं, जिनकी कलाकृतियों ने हमारे भारतीय समाज में महिलाओं को विशेष दर्जा दिलाया है। आज महिलाओं टेक्सटाइल डिजाइनिंग, प्रिन्ट मेकिंग इन्टीरियर डिजाइनिंग, क्ले मॉडलिंग, फैशन व ज्वेलरी डिजाइनिंग में भी अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही हैं। उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली से केवल भारत को ही नहीं, बल्कि विश्व के कला जगत को गौरवान्वित करने में अपना योगदान दिया है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

विषय विस्तार– एतिहासिक दृष्टि से देखा जाए, तो महिला चित्रकारों के सबसे प्राचीन साक्ष्य हमें महाभारत नामक महाकाव्य में प्राप्त होते हैं। जिसमें चित्रलेखा नामक एक महिला चित्रकार का जिक्र किया गया है। वह महिला चित्रकारी में इतनी निपुण थी, कि महज कल्पना अथवा हुलिया बताने पर भी किसी भी व्यक्ति का चित्र खिंच सकती थी। अपनी सखी उषा के स्वपन में आये राजकुमार को उन्होंने इसी तरह चित्रित किया था। यह राजकुमार कोई ओर नहीं, बल्कि तत्कालीन द्वारिका नरेश भगवान श्रीकृष्ण का पौत्र अनिरुद्ध था। इसके पश्चात सैकड़ो सालों के इतिहास में किसी महिला चित्रकार के सक्रिय होने की पुष्टि नहीं होती। लगभग पन्द्रह सौ वर्षों के पश्चात् मेवाड़, अजमेर और और मुगल शैली में इक्का–दुक्का महिला चित्रकारों का जिक्र आता है। यूँ तो सोलहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में भी बीजापुर के शासक अली आदिलशाह प्रथम की बेगम चांद थी। जैसा कि तत्कालीन परिस्थितियों से ज्ञात होता है कि उस समय की रानियां और राजकुमारी शिकार, नृत्य और शायरी के साथ–साथ चित्रकारी का भी शौक रखती थी। फिर मेवाड़ शैली में कमला और इलायची, अजमेर शैली में उस्ना और साहिबा तथा मुगल शैली में साईफा बानो, नादिरा बानो और रुकइया बानो के अतिरिक्त किसी महिला कलाकार का स्पष्ट और प्रामाणिक उल्लेख शायद ही कहीं मिलता है। भारतीय चित्रकला के इतिहास में इसके बाद 20वीं शताब्दी की आरंभ तक चित्रकला के अनंत आकाश पर किसी महिला नक्षत्र के दर्शन तक नहीं होते।

अगर हम समकालीन महिला चित्रकारों की बात करें तो आज स्त्री ने पुरुष को पछाड़ कर इस पुरुष प्रधान समाज में अपनी अलग जगह बनाई है, अपना अलग मुकाम हासिल किया है। समकालीन महिला कलाकारों की बात करें तो अमृता शेरगिल, बी. प्रभा, मृणालिनी मुखर्जी, भारती खेर, अंजली इला मेनन गोगी, सरोज पाल, अर्पिता सिंह, मीरा मुखर्जी, अनुपम सूद, महासुंदरी देवी इत्यादि ऐसे नाम हैं; जो किसी परिचय के मोहताज नहीं है। यह कला जगत के ऐसे सितारे हैं, जो विश्व कला आकाश में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं, किंतु अफसोस की बात है कि यह नाम उंगलियों पर गिने जा सकते हैं।

अगर हम इतिहास में देखें तो मुट्ठी भर महिला कलाकार मुगल काल के दौरान कम कर रही थीं, जिन्होंने एक पेशे के रूप में कला का अभ्यास किया। सम्राट जहांगीर के समय की गिनती करने वाली महिलाओं में से एक साईफा बानो थी, जिन्होंने उस दौरान प्रसिद्धि हासिल की थी। उस दौर की उनकी केवल तीन से चार पेंटिंग की मिली है, फिर भी यह चित्र उल्लेखनीय है। उनका सबसे महत्वपूर्ण काम है "द लेडी पैंट्स एंड सेल्फ पोट्रेट व्हाइल हर अटेंडेड फेसेस हिज थर्मर आईना"। उनके अन्य चित्रों को जटिल विवरण और उत्कृष्ट स्ट्रोक से भरा हुआ माना जाता है। संभवतः 19वीं सदी में काफी समय बाद रिकॉर्ड की गई पहली महिला कलाकार राजा रवि वर्मा की बहन मंगलाबाई थी, जो अपने भाई बहनों की तरह पारिवारिक रीति रिवाज का पालन करती थी। उसने तेल चित्रकला का पूर्व अभ्यास किया। मंगलाबाई के लोकप्रिय कार्यों में एक उपहार रूप में अपने बड़े बहन–भाइयों का सहयोग मिला। त्रिवेंद्रम में राजा रवि वर्मा का प्राचीन चित्रों की योग्यता का प्रचुर प्रमाण है, राजा रवि वर्मा ने 14 चित्रों के प्रसिद्ध गायकवाड आयोग को पूरा करने के लिए उनकी सहायता ली; जो हिंदू लोग कथाओं द्वारा प्रेरित थे। ब्रिटिश शासन काल में ही कोलकाता में सन् 1879 में युवा महिला कलाकारों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें रविंद्र नाथ टैगोर की भतीजी ग्रहणी सुनैना देवी को लोक कला के लिए सेलिब्रिटी स्टेटस सम्मान से नवाजा गया। उस समय भी ऐसी कई महिला चित्रकार हुई, जिनकी कलाकृति एवं चित्रण कार्य ने उन्हें राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान दिलाई। इन महिला चित्रकारों में प्रतिभा टैगोर, लीला मेहता, सविता टैगोर, रेणु कुमारी देवी के नाम दिखाई पड़ते हैं। इन महिला कलाकारों में रविंद्र नाथ टैगोर की बहन सुनैना देवी को स्टेला क्रेमरिश ने पहली आधुनिक भारतीय महिला कलाकार कहा है।

आधुनिक भारतीय कला की शुरुआत कहीं ना कहीं अमृता शेरगिल की कला से ही की जाती है। अमृता शेरगिल वास्तव में एक ऐसी रचनाकार है, जिन्होंने अपनी रचनात्मक क्षमता के बल पर बहुत ही छोटी उम्र में बड़ा मुकाम हासिल कर लिया था। अमृता शेरगिल ने यूरोपियन तकनीक के प्रयुक्त तथा भारतीय विषयों को एक सूत्र में पिरोने का सफल प्रयोग किया। अमृता शेरगिल वास्तव में स्वतंत्रता पूर्व भारतीय कला की एक महत्वपूर्ण कलाकार थी। वह अजंता के फ्रांसको चित्रों से अत्यधिक प्रेरित थी, जिससे उनकी शैली और रचना पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। अमृता शेरगिल भारतीय कला को आगे बढ़ाने की प्रयास में भारतीय संवेदनशीलता के भीतर अंतरराष्ट्रीय सौंदर्य शास्त्र को शामिल करने की आवश्यकता को संबोधित करने वाली पहली महिला कलाकार बनी। उन्होंने पाश्चात् लयात्मकता से प्रभावित होकर भारतीय जनता से युक्त चित्रों को बनाया। उनके चित्र कौशल एवं शैली में पश्चिमी थे, परंतु उनके विषय भारतीय दैनिक जीवन थे। इस कारण उनके चित्रों में पाश्चात्य एवं भारतीय कला दोनों का ही मिश्रण दिखता है। वह अपने भारतीय और यूरोपीय विरासत के बीच एक संवाद बनाने के विचार से विमुख नहीं थी। उनकी कला साधारण एवं अलंकारिक शैली की है, परंतु साथ ही बहुत ही भाव युक्त एवं अपने भावों में उत्पन्न करने वाली है। आपके चित्रों की आकृतियों का दुख भाव समय के कष्टप्रद जीवन को दिखाता है। वह सर्वप्रथम भारतीय महिला कलाकार बनी, जो तेल रंग में ही चित्रण करती थी।

अमृता के चित्रों ने नारी स्वभाव की सहज कोमलता, ममता एवं दया के भावों का बहुत सुन्दर चित्रण किया गया है। उनकी पेंटिंग वधु का श्रृंगार, भिखारी, स्त्री एवं सूरजमुखी, मदर इंडिया कुछ इसी प्रकार की कलाकृतियां है। जो स्थान साहित्य में मुंशी प्रेमचंद जी का है, वही स्थान श्री वाचस्पति गैरोला ने चित्रकला में अमृता को दिया है। अमृता ने सन् 1936 में अजंता एलोरा की यात्रा की, इस यात्रा के बाद बनाए गए उनके चित्रों में बहुत परिवर्तन मिलता है। भावपूर्ण चेहरों में बोलती आंखें हाथ वह पैरों की मुद्रा में एक नया आकर्षण तथा मानव आकृतियों के समूह संयोजन में अजंता का प्रभाव स्पष्ट है।

बी. प्रभा एक अन्य प्रसिद्ध कलाकार हैं, जिन्होंने अपने काम में सामाजिक चेतना का पता लगाने के लिए अमृता की विरासत को बनाए रखा। प्रभा ने कहा – **"मेरा उद्देश्य महिलाओं के आघात और त्रासदी को चित्रित करना है।"**

प्रभा की पेंटिंग परिदृश्य से लेकर सामाजिक मुद्दों जैसे – सूखा, अकाल, बेघर होने और दर्द बांग्लादेश युद्ध की पीड़ा, उनके

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

सामाजिक वातावरण की गहन भावना और धारणा को दर्शाती है। मुंबई की मछुआरे महिलाओं की उनकी कल्पना, ग्रामीण उपस्थिति के साथ बड़े अंगों में अच्छी तरह से निर्भीक ढंग से क्रियान्वित निम्न वर्ग की महिलाओं की प्रस्तुति द्वारा भारतीय महिलाओं की सुंदरता का जश्न मनाया है।

अर्पिता सिंह आज समकालीन कला के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, उनकी कला.ति कला के क्षेत्र में अपनी एक अलग विशेषता रखती है। यह प्रसिद्ध चित्रकार परमजीत सिंह की अर्धांगिनी हैं। अर्पिता ने कला के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। जिससे उनकी कला.तियों को तीन भागों में बांटा गया। आ.ति मूलक कला.तियां जिनको प्रथम भाग में रखा गया है, द्वितीय भाग में उनकी बाल कथा पर आधारित .तियों को रखा गया है तथा तृतीय भाग में अमूर्तवादी .तियों को स्थान दिया गया है। इस प्रकार इस महिला चित्रकार ने अपने आत्मबल व रुचि को अपना ध्येय बनाकर आज राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है। अर्पिता सिंह की छोटी–छोटी झाड़ियां, जो मानो विभिन्न मानव स्थिति की प्रतीक हैं; उनके देशज रंग भी गौरतालाब हैं। लेकिन बहुत कम युवा कलाकारों के चित्र ऐसे हैं, जिनमें आकारों की ऐसी अर्थपूर्ण खोज और उनकी सार्थक संरचना देखने को मिलती है।

अपर्णा कौर अंतर्राष्ट्रीय आधुनिक महिला चित्रकारों में से एक हैं। पंजाबी चित्रकार होने के नाते उन्होंने सिख गुरुओं और आध्यात्मिकता को अपनी कला का आधार बनाकर प्रस्तुत किया। उनकी कला.ति अधिकतर महिलाओं पर आधारित है, उन्होंने इन्हीं से संबंधित सामाजिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए ''रक्षक ही भक्षक'' नामक चित्रों की एक पूरी श्रृंखला तैयार की। इसके अलावा उन्होंने विभिन्न सामाजिक विषयों को अपनी तूलिका से उकेरा। उनकी कला में किसी भी प्रकार की कोई अलंकारिकता देखने को नहीं मिलती, उन्होंने सपाट धरातल पर अपनी सोच व रंगों की समझ को दर्शाते हुए चित्रों की स्थापना की। उन्होंने मानव आ.तियां साधारण रूप में चित्रित न करके, उन्हें अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर धरातल में कहीं उड़ती हुई, कहीं ध्यान मग्न और कहीं पर तो उन्होंने आकृतियों को बीच से कटा हुआ बनाकर हमें सोचने पर मजबूर कर दिया है। उन्होंने अपनी कला.तियों में स्केल, प्रकार, चंदा, ज्यामितीय सामान व धागा, बादल व पानी के साथ मानव आ.ति अंकित की है। उनकी यह कला.तियां इस यथार्थवादी संसार से संबंधित न होकर अति यथार्थवादी संसार की रचना प्रतीत होती है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों व जीवन संघर्ष को अपना ध्येय बनाकर उनके प्रति आवाज उठाने की हिम्मत की है। इस प्रकार अपर्णा कौर आज अति यथार्थवादी कलाकारों की सूची में मुख्य स्थान पर हैं।उन्होंने यथार्थवादी संसार से समस्याओं का चयन कर उनको अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर अति यथार्थवादी विचारधारा में चित्रित कर इस मतलबी वह सामाजिक समस्याओं से ग्रसित संसार पर एक कटाक्ष किया है।

1945 में जन्मी गोगी सरोज पाल भारतीय महिला चित्रकारों में उच्च पायदान पर हैं। वह एक ऐसी महिला चित्रकार हैं, जिनमें उनके बोल्डनेस उनकी पहचान बन गई है। उनमें मानवीयता की गहरी समझ है, इस समझ को दर्शाते हुए उन्होंने अपने चित्रों में स्त्री पुरुष व बच्चों की दुनिया को बहुत ही सहज तरीके से उतारा है। दिवराला का सती कांड जो सन् 1987 में हुआ था, इस सती कांड ने पूरे देश को अपने तरीके से उद्वेलित किया। क्योंकि गोगी सरोज पाल ने स्त्रियों की दुनिया को अपनी कला में स्थान दिया। गोगी स्वयं कहती हैं – **''मेरी पेंटिंग में मेरा औरत होना बहुत महत्वपूर्ण है।''**

इस प्रकार उन्होंने अपने महिला पक्ष को बल देते हुए महिला होने के लाभ बताये। एक महिला होने के नाते उन्होंने साबित कर दिया है, कि औरत कमजोर नहीं है बस जरूरत है उसमें इच्छा शक्ति जागृत करने की।

सुप्रसिद्ध चित्रकार विनोद बिहारी मुखर्जी की मृणालिनी मुखर्जी आज अपने मूर्ति शिल्प के कारण आधुनिक भारतीय कला समाज में एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने वेस्ट अपरंपरागत पदार्थ का इतना अच्छा और सुंदर तरीके से प्रयोग किया, कि कोई सोच भी नहीं सकता। जब मृणालिनी ने शिक्षा के समय अपनी सोच के अनुरूप पतली रस्सियों की बनावट में कार्य करना प्रारंभ किया, तो उन्हें काफी प्रोत्साहन मिला। यह एकदम नवीन सोच थी। उन्होंने जूट जैसी सामान्य सी वस्तु को बहुत अच्छी तरह से प्रयोग कर एक नया ही रूप प्रदान किया। इस माध्यम से कार्य करना और स्पीड बनाना दोनों ही मुश्किल कार्य है, परंतु मृणालिनी ने दोनों ही कार्यों में महारत हासिल कर ली थी। इसके साथ ही चित्रकार ने ग्राफिक माध्यम से काफी अच्छा कार्य किया है, मृणालिनी अपनी कला.तियों में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री स्वयं ही खरीदती हैं और तैयार भी स्वयं ही करती हैं। यह सामग्री वे बंगाल और गुजरात से मंगाती हैं। मूर्ति शिल्प में वह सन के स्वाभाविक रंगों का इस्तेमाल तो करती हैं। बैंगनी, हरे, काले, सुनहरे तमाम तरह के रंगों की विशेष बनावट पाने के लिए वह स्वयं अपनी देखरेख में इन रस्सियों को रंगती हैं। बसंती–परी, वन श्री, वुमेन ऑन पीकॉक आदि उनकी प्रमुख कृतियां है।

अंजलि इला मेनन एक ऐसी उच्च कोटि कलाकार हैं, जिन्होंने अपनी कला.तियों में आकारों को निश्चित स्थान प्रदान किया है। उनके चित्र में दुख भरी आंखें बहुत ही प्रभावशाली हैं, जो सच्चाई एवं दुख को प्र.त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्त्री आ.तियां एशियन एवं रंगाकन वाइजेन्टाइन सा दिखता है। उनके चित्रों की भूमि अधिकतर कठोर है। जैसे हार्ड बोर्ड या मैसोनाइट बोर्ड। उनके आकार प्रतिमा की तरह गमगीन शांत एवं स्थिर हैं। उनकी कला.ति परिपक्वता व दुख के साथ–साथ हमें यथार्थ का बोध भी कराती है। उन्होंने कई चित्रों में स्वयं को एक पात्र के रूप में भी चित्रित किया है। उनके चित्रों में ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य की शक्ति की सरलता भरी भावना तथा तनाव की विषाद भरी भावना को प्रदर्शित करती है।

निष्कर्ष– इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्त्री और पुरुष समाज के एक सिक्कें के दो पहलू हैं, तो फिर महिलाओं को भी पुरुषों के समान हर क्षेत्र में स्थान प्राप्त होना चाहिए। किसी भी तरह की नकारात्मक सोच इस समाज के विकास का रोड़ा बन सकती है। आज के इस युग में महिला कलाकार पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। कम ही लोग ही जानते हैं कि भारत में लगने वाला सबसे बड़ा कला मेला किसी पुरुष के दिमाग की उपज नहीं, बल्कि एक महिला कलाकार नेहा पाल के दिमाग की उपज है। जिसमें सैकड़ो कला का बाजार आज हिंदुस्तान में एक छत के नीचे देखा जा सकता है। यह सदी की पहली ऐसी महिला कलाकार हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

जिसने भारत को विश्व स्तर पर कला के क्षेत्र में अलग नहीं पहचान दिलाई है। आज इन महिला चित्रकारों से प्रेरित और प्रभावित होकर न जाने कितनी महिलायें कला के क्षेत्र में आगे आई हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कला दीर्घा – अक्टूबर 2003 अंक 7.
2. भटनागर, सुरेश कुमार संजय – भारत में शिक्षा का विकास, सूर्या पब्लिकेशन प्रथम संस्करण।
3. दास, श्रीमती कुसुम – भारतीय पाश्चात्य कला, उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी लखनऊ, प्रथम संस्करण 1977, पृष्ठ–168.
4. वही – वही पृष्ठ 168–169
5. अग्रवाल, आर. ए. – कला विलास, भारतीय चित्रकला का विवेचन, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ, नवीन संस्करण 2002, पृष्ठ–203–204.
6. समकालीन कला – ललित कला अकादमी की पत्रिका, नवंबर 1983, संख्या–1, पृष्ठ–144.
7. विरजन राम – समकालीन भारतीय कला, निर्मल बुक एजेंसी, विश्वविद्यालय परिसर, कुरुक्षेत्र, प्रथम–संस्करण 2003, पृष्ठ–72
8. डॉ. जोशी अर्चना – विश्व इतिहास में महिला चित्रकार।
9. wikipedia.https://hindi.livehistoryindia.com
10. anubooks.com-https://anubooks.com
11. U;wtfDyd https://hindi.newsclickinadrtspecial

*****